IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)
BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 2, April-june, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.19741107
ISSN : 3048-6971

धौलपुर स्थित मचकुंड धाम का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. कुलराज व्यास
सहायक आचार्य , शिक्षा संकाय
आई.ए. एस.ई. (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) सरदारशहर
Email ID: - anandvyas2016@gmail.com

सारांश (Abstract)

राजस्थान के धौलपुर जिले में स्थित मचकुंड को 'तीर्थों का भांजा' कहा जाता है। धौलपुर शहर से लगभग 3 किमी दूर स्थित यह एक प्राचीन और प्राकृतिक सरोवर है, जो गंधमादन पर्वत की तलहटी में बसा है। मचकुंड धाम भारतीय सांस्कृतिक-धार्मिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जिसकी ऐतिहासिकता पौराणिक आख्यानों से लेकर मध्यकालीन स्थापत्य विकास तक विस्तृत है। यह स्थल न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता, लोक परंपराओं तथा स्थापत्य कला का भी एक सशक्त प्रतीक है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मचकुंड धाम के ऐतिहासिक उद्भव, पौराणिक आधार, स्थापत्य स्वरूप, धार्मिक गतिविधियों तथा समकालीन पर्यटन परिप्रेक्ष्य का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में ऐतिहासिक स्रोतों, पुराणों, पुरातात्विक साक्ष्यों तथा स्थानीय परंपराओं का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि मचकुंड धाम भारतीय सभ्यता की निरंतरता और सांस्कृतिक समन्वय का एक जीवंत उदाहरण है। साथ ही, इसके संरक्षण एवं सतत् विकास हेतु योजनाबद्ध प्रयासों की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

मूल शब्द (Keywords) मचकुंड धाम, धौलपुर, राजा मचकुंड, नागर शैली, सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक पर्यटन, लोक परंपरा

1. प्रस्तावना (Introduction)

भारतीय सभ्यता में तीर्थस्थलों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। ये स्थल केवल धार्मिक आस्था के केंद्र ही नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों, आर्थिक विनिमय तथा क्षेत्रीय पहचान के भी प्रमुख केंद्र रहे हैं। प्राचीन काल से ही भारत में तीर्थयात्रा की परंपरा ने सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ किया है।

राजस्थान, जो मुख्यतः अपने किलों, महलों और वीरता की गाथाओं के लिए जाना जाता है, समान रूप से प्राचीन धार्मिक स्थलों से भी समृद्ध है। इसी क्रम में मचकुंड धाम का विशेष स्थान है, जो अपनी ऐतिहासिकता, पौराणिकता और स्थापत्य वैभव के कारण अद्वितीय है।

मचकुंड धाम चंबल नदी के निकट स्थित एक प्राचीन तीर्थस्थल है, जो विभिन्न ऐतिहासिक कालों में विकसित हुआ है। यह स्थल न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि क्षेत्रीय संस्कृति, लोक परंपराओं तथा सामाजिक समन्वय का भी प्रतिनिधित्व करता है। धौलपुर (राजस्थान) का प्रसिद्ध मचकुंड मेला प्रतिवर्ष भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष में ऋषि पंचमी और देव छठ (हलछठ) के अवसर पर भरता है। यह दो दिवसीय मेला आम तौर पर अगस्त या सितंबर के महीने में आयोजित किया जाता है।

इस शोध का उद्देश्य मचकुंड धाम के बहुआयामी स्वरूप का विश्लेषण करना तथा इसके ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व को अकादमिक दृष्टिकोण से स्थापित करना है।

2. स्रोत एवं अनुसंधान पद्धति (Sources & Methodology)

इस शोध में विविध प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिनमें पौराणिक ग्रंथ, ऐतिहासिक साहित्य, पुरातात्विक प्रमाण तथा लोक परंपराएँ प्रमुख हैं।

प्रमुख स्रोतों में श्रीमद्भागवत पुराण एवं विष्णु पुराण जैसे ग्रंथ शामिल हैं, जिनमें मचकुंड से संबंधित पौराणिक कथाएँ वर्णित हैं। इसके अतिरिक्त राजस्थान के इतिहास से संबंधित ग्रंथ, पुरातत्व सर्वेक्षण की रिपोर्टें तथा स्थानीय लोककथाएँ भी इस अध्ययन के आधार हैं।

अनुसंधान में निम्नलिखित पद्धतियों का उपयोग किया गया है–

ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति।

तुलनात्मक पद्धति।

वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति।

इन पद्धतियों के माध्यम से उपलब्ध स्रोतों का समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है।

3. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Historical Background)

मचकुंड धाम का इतिहास पौराणिक परंपराओं से जुड़ा हुआ है। पुराणों के अनुसार राजा मचकुंड इक्ष्वाकु वंश के एक प्रतापी एवं धर्मनिष्ठ शासक थे। उन्होंने देवासुर संग्राम में देवताओं की सहायता की थी, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें दीर्घकालीन निद्रा का वरदान प्राप्त हुआ। कथा के अनुसार, जब कालयवन नामक असुर ने भगवान कृष्ण का पीछा किया, तो कृष्ण उसे मचकुंड की गुफा में ले गए। जैसे ही कालयवन ने मचकुंड को स्पर्श किया, वह उनकी दृष्टि से भस्म हो गया। यह घटना इस स्थल को धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र बनाती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो मचकुंड धाम का विकास विभिन्न कालों में हुआ। विशेषकर मध्यकाल (8वीं-12वीं शताब्दी) में यहाँ मंदिरों, घाटों एवं कुंडों का निर्माण हुआ, जो आज भी इस स्थल की प्राचीनता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि यह स्थल प्राचीन काल में एक महत्वपूर्ण साधना केंद्र रहा होगा, जहाँ ऋषि-मुनि तपस्या करते थे। इस प्रकार, मचकुंड धाम का ऐतिहासिक विकास पौराणिक, धार्मिक एवं सामाजिक तत्वों के समन्वय से हुआ है।

4. स्थापत्य एवं पुरातात्विक विश्लेषण (Architectural & Archaeological Analysis)

मचकुंड धाम की स्थापत्य संरचना भारतीय मंदिर वास्तुकला की नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

यहाँ स्थित कुंड अर्धवृत्ताकार संरचना में निर्मित है, जिसके चारों ओर बहुस्तरीय घाट बने हुए हैं। ये घाट न केवल धार्मिक अनुष्ठानों के लिए उपयोगी हैं, बल्कि स्थापत्य सौंदर्य का भी उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

मंदिरों की संरचना शिखरयुक्त है, जिसमें ऊर्ध्वमुखी रेखाएँ तथा अलंकरण स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। लाल बलुआ पत्थर का उपयोग स्थानीय स्थापत्य परंपरा को दर्शाता है।

मूर्तिकला की दृष्टि से यहाँ विभिन्न देवी-देवताओं, यक्ष-यक्षिणियों तथा लोकजीवन के दृश्यों का चित्रण किया गया है। यह कला उस समय के सामाजिक एवं धार्मिक जीवन को समझने में सहायक है।

पुरातात्विक दृष्टि से यह स्थल अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह क्षेत्रीय स्थापत्य विकास, शिल्पकला तथा धार्मिक संरचनाओं के अध्ययन का एक प्रमुख केंद्र है।

5. सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्त्व (Cultural and Religious Significance)

मचकुंड धाम एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र है, जहाँ धार्मिक आस्था और लोक परंपराएँ एक साथ विकसित होती हैं।

यहाँ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले मेले क्षेत्रीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग हैं। इन मेलों में लोकगीत, नृत्य, धार्मिक अनुष्ठान तथा सामाजिक मेल-मिलाप का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

अमावस्या और पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ स्नान का विशेष धार्मिक महत्त्व है। मान्यता है कि इस पवित्र सरोवर में स्नान करने से सभी प्रकार के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।श्रद्धालु यह मानते हैं कि यहाँ स्नान करने से पापों का नाश होता है और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इसके अतिरिक्त, यह स्थल स्थानीय समुदाय के लिए सामाजिक एकता का केंद्र भी है, जहाँ विभिन्न वर्गों के लोग एकत्रित होकर सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखते हैं।

इस प्रकार, मचकुंड धाम केवल एक तीर्थ स्थल नहीं, बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता और लोक-आस्था का प्रतीक है।

6. पर्यटन एवं संरक्षण (Tourism and Conservation)

आधुनिक समय में मचकुंड धाम धार्मिक पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है। राजस्थान सरकार एवं राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा इस स्थल के विकास हेतु विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं।

पर्यटन के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है तथा क्षेत्रीय पहचान को बढ़ावा मिलता है।

हालांकि, इसके साथ ही कई चुनौतियाँ भी सामने आती हैं–

ऐतिहासिक संरचनाओं का क्षरण

पर्यावरणीय प्रदूषण

अपर्याप्त प्रबंधन व्यवस्था

अतः आवश्यक है कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण तथा राज्य सरकार मिलकर इस स्थल के संरक्षण हेतु वैज्ञानिक एवं योजनाबद्ध प्रयास करें।

सतत् पर्यटन (Sustainable Tourism) की अवधारणा को अपनाकर इस स्थल को संरक्षित किया जा सकता है।

7. निष्कर्ष (Conclusion)

मचकुंड धाम एक बहुआयामी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल है, जो पौराणिक परंपरा, स्थापत्य कला और लोक-संस्कृति का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि यह स्थल केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है।

भविष्य में इसके संरक्षण, वैज्ञानिक अध्ययन तथा सतत् पर्यटन विकास पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है, ताकि यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रह सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.श्रीमद्भागवत पुराण

2 .विष्णु पुराण

3 .शर्मा, जी.एन. (2008). राजस्थान का इतिहास. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

4 .माथुर, आर.सी. (2010). राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास. जयपुर: राजस्थानी ग्रंथागार।

5 .सिंह, के.एस. (2005). भारतीय लोक संस्कृति. नई दिल्ली: मानव विज्ञान सर्वेक्षण।

6 .भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण. वार्षिक प्रतिवेदन (विभिन्न वर्ष)।

7 .राजस्थान पर्यटन विभाग

8 .धौलपुर जिला गाइड।